International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 10 Issue 5, September-October, 2022, Impact Factor: 7.326

वर्तमान संदर्भ में स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन

डा० अंजलि श्योकन्द

सहायक आचार्य, शिक्षक-शिक्षा विभाग, टीका राम कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, सोनीपत हरियाणा

स्वामी विवेकानन्द ने अपने लेखों एवं भाषणों के जरिए जो विचार प्रस्तुत किया है उसमें मुख्यतः आत्मविश्वास आत्मगौरव की भावना, मानवतावादी एवं भारतीय संस्कृति में नूतन विश्वास पर काफी बल दिया है। उनके इन्हीं तथ्यों को देखकर कहा जा सकता है कि स्वामी जी ने राष्ट्रवादी थे। इसी कारण महान स्वतन्त्रता सेनानी सुभाष चन्द्र बोस ने स्वानी विवेकानन्द को आधुनिक राष्ट्रीय आन्दोलन का आध्यात्मिक पिता कहकर सम्बोधित किया। विवेकानन्द के विचारों के तथ्य शाश्वत है और आज भी आत्मसात करने योग्य है। स्वामी जी का लक्ष्य समाज में समताभाव को स्थापित करना था. अतएव ये दलितों, गरीबों, शोषितों के प्रति अत्यन्त संवेदनशील थे। स्वामी जी ने अपनी मानवतावादी विचार धारा के कारण हो रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। आज भी मिशन के कार्य सराहनीय है। मेरी मान्यता है कि सम्पूर्ण राष्ट्र में

मानवतावादी विचारधारा को बल मिलना चाहिए तभी भारतवर्ष विकसित कहा जा सकता है।

संकेत शब्द :- स्वामी विवेकानन्द, शाश्वत, मानवतावादी विचार धारा ।

भूमिका :

स्वामी विवेकानंद जी प्रबल मानवतावादी थे। उनकी भावनाओं में मानवतावाद झलकता है, इन्हीं भावनाओं से अभिभूत होकर स्वामी विवेकानंद जी ने कहा है, "अगर आपके पास अधिकार है तो यह समझे कि भगवान के बच्चों की सेवा खुद उसकी ही सेवा है गरीबों की सेवा का काम पूजा भाव से करो।"

इसी संदर्भ में स्वामी विवेकानंद जी कहते है, "जब तक करोड़ों लोग भूख और अज्ञान से पीड़ित हैं तब तक मैं उस परिवार को देशद्रोही समझूंगा जो उनके खर्च से शिक्षित बनकर उनके प्रति तनिक भी ध्यान नहीं देता है।" भारतवर्ष को स्वतंत्रता प्राप्त किए हुए सात दशक बीत चुके हैं, इसके साथ-साथ भारत में वैज्ञानिक प्रगति भी हुयी है और भौतिक प्रगति भी। परंतु अभी भी कहीं न कहीं सामाजिक, धार्मिक और दार्शनिक भावनाओं का ह्रास है, जिसके फलस्वरूप चारित्रिक पतन यत्र तत्र सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। आज भारत वर्ष में अपहरण, हिंसा, भ्रष्टाचार, चोरी इत्यादि घटनाओं का अंबार सा लगा हुआ है। भारत के युवाओं में युवाशक्ति के विवेक का जागरण करना अति आवश्यक है।

शैक्षिक उद्देश्य :

1. मनुष्य का चरित्र निर्माण

2. मनुष्य को स्वालम्बी बनाना
3. मनुष्य में उत्तम विचारों का निर्माण
4. मनुष्य का निर्माण
5. दीन-हीनों की सहायता के भाव को उत्पन्न करना
6. राष्ट्रभक्ति को उत्पन्न करना

वर्तमान संदर्भ में स्वामी विवेकानंद के विचारों की उपादेयता:

शिक्षा :

विवेकानंद जी ने शिक्षा को गुरु गृह में दिए जाने के पक्षधर थे जहां पढ़ने के लिए आवश्यक है। एकाग्रता के लिए जरूरी है ध्यान, ध्यान से ही हम इन्द्रियों पर संयम रखकर एकाग्रता प्राप्त कर सकते है।

शिक्षा के माध्यम से मानव मस्तिष्क में सुधार करने का लक्ष्य रखना चाहिए। विवेकानंद कहते हैं, "शिक्षा का मतलब यह नहीं है कि दिमाग में कई ऐसी सूचनाएं एकत्रित कर ली जाएं जिसका जीवन में कोई इस्तेमाल ही नहीं हो। हमारी शिक्षा जीवन निर्माण, व्यक्ति निर्माण और चरित्र निर्माण पर आधारित होनी चाहिए।" स्वामी विवेकानंद का मानना है कि भारत की खोई हुई प्रतिष्ठा तथा सम्मान को शिक्षा द्वारा ही वापस लाया जा सकता है। किसी देश की योग्यता तथा क्षमता में वृद्धि उस देश के नागरिकों के मध्य व्याप्त शिक्षा के स्तर से ही हो सकती है। स्वामी विवेकानंद ने ऐसी शिक्षा पर बल दिया जिसके माध्यम से विद्यार्थी की आत्मोन्नति हो साथ ही शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जिसमें विद्यार्थी ज्ञान प्राप्ति में आत्मनिर्भर तथा चुनौतियों से निपटने में स्वयं सक्षम हो। विवेकानंद ऐसी शिक्षा पद्धति के घोर विरोधी थे जिसमें गरीबों एवं वंचित वर्गों के लिये स्थान नहीं था।

आगे लिखते है विवेकानद जी, यदि विचारों को समेट लिया है और उन्हें अपना जीवन और चरित्र बना दिया है, तो आपके पास किसी भी व्यक्ति की तुलना में अधिक शिक्षा है जो दिल से पूरी लाइब्रेरी प्राप्त कर चुकी है। अगर शिक्षा सूचना के समान थी, तो पुस्तकालय, दुनिया में सबसे बड़ा ऋषि और ऋषि विश्वकोश होंगे। यह बच्चों की शिक्षा को मातृभाषा में देने के पक्षधर थे, उनका कहना था कि संस्कृत भाषा से अमृत रूपी ज्ञान लेकर उसे मातृभाषा में दिया जाए तथा यह ज्ञान पूरी तरह व्यवहारिक होना चाहिए। वह शिक्षा को पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ चरित्र की शिक्षा को देने की बात करते है। यह विद्यालयों का पर्यावरण शुद्ध रखने और वहां व्यायाम, खेलकूद, अध्ययन, अध्यापन के साथ भजन कीर्तन एवं ध्यान योग की क्रियाएं कराने के समर्थक थे। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि, "जिस शिक्षा से हम अपना जीवन निर्माण कर सके, मनुष्य बन सके, चरित्र गठन कर सके और विचारों का सामंजस्य कर सके वही वास्तव में शिक्षा कहलाने योग्य है। मानव निर्माण को शिक्षा का मूल उद्देश्य मानने वाले स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन परम्परागत और आधुनिक शिक्षा प्रणाली का अद्भुत समन्वय है। स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन आज भी अत्यंत प्रासंगिक है।

धर्म :

स्वामी विवेकानंद ने दुनिया को हिंदू धर्म का परिचय देते हुए इसकी धार्मिक-वैचारिक सहिष्णुता को पेश किया, मैं एक ऐसे धर्म का अनुयायी होने से गर्व का अनुभव करता हूं, जिसने संसार को सहिष्णुता और सार्वभौम स्वीकृति की शिक्षा दी है। मैं ऐसे धर्म का अनुयायी होने पर गर्व करता हूं जिसने इस पृथ्वी के समस्त धर्मों और तमाम देशों के उत्पीड़ितों और शरणार्थियों को आश्रय दिया है।"

विवेकानंद का विचार है कि सभी धर्म एक ही लक्ष्य की ओर ले जाते हैं, जो उनके आध्यात्मिक गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस के आध्यात्मिक प्रयोगों पर आधारित है। परमहंस रहस्यवाद के इतिहास में अद्वितीय स्थान रखते हैं, जिनके आध्यात्मिक अभ्यासों में यह विश्वास निहित है कि सगुण और निर्गुण की अवधारणा के साथ ही ईसाईयत और इस्लाम के आध्यात्मिक अभ्यास आदि सभी एक ही बोध या जागृति की ओर ले जाते हैं।

शिकागों के अपने प्रवास के दौरान स्वामी विवेकानंद ने तीन महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर बल दिया। पहला, उन्होंने कहा कि भारतीय परंपरा न केवल सहिष्णुता बल्कि सभी धर्मों को सत्य के रूप में स्वीकार करने में विश्वास रखती है। दूसरा, उन्होंने स्पष्ट और मुखर शब्दों में इस बात पर बल दिया कि बौद्ध धर्म के बिना हिंदू धर्म और हिंदू धर्म के बिना बौद्ध धर्म अपूर्ण है। तीसरा, यदि कोई व्यक्ति कवल अपने धर्म के अनन्य अस्तित्व और दूसरों के धर्म के विनाश का स्वप्न रखता है, तो वह सम्पूर्ण मानवता के खिलाफ है। यह लिखते है- "यह देश धर्म, दर्शन और प्रेम की जन्मभूमि है। ये सब चीजें अभी भी भारत में विद्यमान है। मुझे इस दुनिया की जो जानकारी है. उसके बल पर दृढतापूर्वक कह सकता हूं कि इन बालों में भारत अन्य देशों की अपेक्षा अब भी श्रेष्ठ है।"

राष्ट्रप्रेम:

स्वामी जी की राष्ट्रभक्ति निम्न शब्दों से झलकती है पीड़ितों की सेवा के लिए आवश्यकता पड़ने पर हम अपने मठ की भूमि तक भी बेच देंगे हजारों असहाय नर नारी हमारे नेत्रों के सामने कष्ट भोगते रहें और हम मठ में रहें, यह असम्भव है। हम सन्यासी हैं, वृक्षों के नीचे निवास करेंगे और भिक्षा मांगकर जीवित रह लेंगे।

चारित्रिक एवं नैतिक विकास :

नैतिकता अतीत में आधुनिक मूल्यों का विकास न होने के कारण व्यक्तिक एवं सामाजिक जीवन में नैतिकता प्रमुख रूप से धर्म एवं सामाजिक बंधनों पर आधारित होती थी, हालाँकि ऐसी स्थिति वर्तमान में भी मौजूद है लेकिन इसके साथ अन्य कारक भी नैतिकता के लिये प्रेरक का कार्य करते हैं। विवेकानंद ने आंतरिक शुद्धता एवं आत्मा की एकता के सिद्धांत पर आधारित नैतिकता की नवीन अवधारणा प्रस्तुत की। विवेकानंद के अनुसार, नैतिकता और कुछ नहीं बल्कि व्यक्ति को एक अच्छा नागरिक बनाने में सहायता करने वाली नियम संहिता है मानव नैसर्गिक रूप से ही नैतिक होता है, अतः व्यक्ति को नैतिकता के मूल्यों को अवश्य अपनाना चाहिये। स्वामी जी कहते है, "किसी की निंदा ना करें। अगर आप मदद के लिए हाथ बढ़ा सकते हैं, तो ज़रूर बढ़ाएं। अगर नहीं बढ़ा सकते, तो अपने हाथ जोड़िये, अपने भाइयों को आशीर्वाद दीजिये, और उन्हें उनके मार्ग पे जाने दीजिये। नैतिकता की महानता को समझाते हुए लिखते है दुनिया तभी पवित्र और अच्छी हो सकती है. जब हम स्वयं पवित्र और अच्छे हो। नैतिकता के साथ-साथ स्वामी जी मनुष्य के चारित्रिक गुण पर भी जोर देते हैं, क्योंकि बिना आदर्श चरित्र के व्यक्ति पशुवत होता है उसे भले बुरे समाज की समझ नहीं हो पाती। इसलिए शिक्षा का प्रमुख कार्य व्यक्ति में चरित्र का उत्तम विकास करे स्वामी विवेकानंद जी कहते हैं, "हमे ऐसी शिक्षा चाहिए जिससे चरित्र का निर्माण हो, मन की शक्ति बढ़े, बुद्धि का विकास हो और मनुष्य अपने पैर पर खड़ा हो सके।"

मानवतावादी:

स्वामी जी ने अपनी मानवतावादी विचार धारा के कारण ही रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। आज भी मिशन के कार्य सराहनीय हैं। मेरी मान्यता है कि सम्पूर्ण राष्ट्र में मानवतावादी विचारधारा को बल मिलना चाहिए तभी भारतवर्ष विकसित कहा जा सकता है। विवेकानन्द प्रबल मानवतावादी थे। इन्हीं भावनाओं से अभिभूत होकर उन्होंने कहा- "जब तक करोड़ों लोग भूख और अज्ञान से पीड़ित हैं तब तक मैं उस हर व्यक्ति को देशद्रोही समझूंगा जो उनके खर्च से शिक्षित बनकर उनके प्रति तनिक भी ध्यान नहीं देता।"

मनुष्य जीवन के सर्वोच्च आदर्श एवं मूल्यों की प्रतिष्ठा का आधार मानवतावादी जीवन दृष्टि ही है। इसलिए इसका महत्व और प्रासंगिकता जीवन के समानान्तर सर्दव मौजूद है। वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में तो इसकी सर्वोपरि आवश्यकता है क्योंकि इक्कीसवी सदी के मानव जीवन में हजारों तरह के विघटन और समस्याएँ हैं, परन्तु सबसे बड़ा संकट मानव जीवन के अस्तित्व का है और इसका एक मात्र समाधान मानवतावादी जीवन दृष्टि में है।

युवाओं के प्रेरणास्रोत :
स्वामी विवेकानन्द भारत के युवा को अपने गौरवशाली अतीत और वैभवशाली भविष्य की एक मजबूत कड़ी के रूप में देखते थे। विवेकानन्द जी कहते थे कि सब शक्ति तुम्हारे भीतर है उस शक्ति को प्रकट करो, इस पर विश्वास करो कि तुम सब कुछ कर सकते हो खुद पर यह विश्वास असंभव सी लगने वाली बातों को संभव बनाने का यह संदेश आज भी देश के युवाओं के लिए उतना ही प्रासंगिक है। युवाओं को राह दिखाते हुए स्वामी विवेकानंद कहते हैं। कोई भी समाज अपराधियों की सक्रियता की वजह से से गर्त में नहीं जाता बल्कि अच्छे लोगों की निष्क्रियता इसकी असली वजह है इसलिए नायक बनो हमेशा निडर रहो। यह डर ही है जो दुख लाता है और भय की वजह है अपने आसपास को नहीं समझना। कुछ प्रतिबद्ध लोग देश का जितना मला कर सकते हैं उतना भला कोई बड़ी भीड़ एक सदी में भी नहीं कर सकती। मेरे बच्चो, आग में कूदने के लिए तैयार रहो। भारत को सिर्फ उसके हजार नौजवानों का बलिदान चाहिए। लेकिन जिनके पास शिक्षा है वे तो ग्रेट अमेरिकन ड्रीम पूरा करने चले जाते हैं और सारी आ पैसा कमाने में लगे रहते हैं। वह युवाओं को आवाह करते हुए कहते हैं, उठो और जागो और तब तक रुको नहीं जब तक कि तमु अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लेते।"

एकाग्रता :
मेरे लिए तो शिक्षा का सार तथ्यों का संग्रहण नहीं बल्कि मस्तिष्क की एकाग्रता है। अगर मुझे मेरी शिक्षा की फिर से शुरुआत करनी पड़े और इस मसले पर अगर मेरी राय ली गई तो में तथ्यों - ब्योरा का अध्ययन एकदम नहीं करूंगा। इसके बजाय मैं एकाग्रता और निर्लिप्तता की शक्ति विकसित करूंगा और फिर उपयुक्त उपकरणों के साथ अपनी इच्छा से तथ्यों को जमा कर सकता हूँ वह समय भी बहुत एकाग्रचित व्यक्ति थे। उनकी एक कहानी बहुत प्रसिद्ध है।

मूल्यांकन एवं निष्कर्ष :

स्वामी विवेकानंद का जन्म 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में हुआ लेकिन उनके विचार और जीवन दर्शन आज के दौर में अत्यधिक प्रासंगिक हैं। विवेकानंद जैसे महापुरुष मृत्यु के बाद भी जीवित रहते हैं और अमर हो जाते हैं तथा सदियों तक अपने विचारों और शिक्षा से लोगों को प्रेरित करते रहते हैं। मौजूदा समय में विश्व संरक्षणवाद एवं कट्टरवाद की ओर बढ़ रहा है जिससे भारत भी अछूता नहीं है, विवेकानंद का राष्ट्रवाद न सिर्फ अंतर्राष्ट्रीयवाद बल्कि मानववाद की भी प्रेरणा देता है। इसके साथ ही विवेकानंद की धर्म की अवधारणा लोगों को जोड़ने के लिये अत्यंत उपयोगी है, क्योंकि यह अवधारणा भारतीय संस्कृति के प्राण तत्त्व सर्वधर्म समभाव पर जोर देती है।

अपने लेख में राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी का कहना था. हमारे जीवन में स्वामी विवेकानंद एक ऐसे तारे के रूप में हैं जो ज्ञान और उम्मीदों से भरा है। उन्होंने यह साबित किया है कि बगैर देह के भी वे हर जगह के लोगों को हर वक्त प्रेरित करते रहेंगे। आइए हम सब मिलकर उनके बताए रास्ते पर आगे बढ़ें।" गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने लिखा है कि "भारत को जानना है तो स्वामी विवेकानंद को पढ़ें।"

भारत सरकार ने सन 1985 से हर साल 12 जनवरी यानी स्वामी विवेकानंद की जयंती को देशभर में राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की, स्वामी विवेकानंद देश के महानतम समाज सुधारक, विचारक और दार्शनिक थे, उनके आदर्शों और विचारों से देशभर के युवा प्रोत्साहित हो सकते हैं स्वामी विवेकानंद के विचारों को जीवन में अपनाकर व्यक्ति सफल हो सकता है शिक्षा में राष्ट्रवाद का समर्थन, मातृ भाषा के प्रति सबल आग्रह एंव मूल्य शिक्षा, एकाग्रता धर्म आदि पर आधारित स्वामी जी का शिक्षा दर्शन आज भी पूर्णतया प्रासंगिक महसूस होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. द कंपलीट वर्क्स आफ स्वामी विवेकानंद, वॉल्यूम 6 अद्वैत आश्रम कोलकाता, पृष्ठ संख्या 38-39
2. द कंपलीट वर्क्स आफ स्वामी विवेकानंद, वॉल्यूम 7. पृष्ठ संख्या 224
3. शर्मा. योग कुमार (2001). भारतीय राजनीतिक चिन्तन नई दिल्ली: कनिष्ठा पब्लिशर्स पृष्ठ संख्या 23
4. सरकार, सुमित (NA) आधुनिक भारत (1885-1947), नई दिल्ली राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 91
5. नागोरी, एस. एल. (NA). प्राचीन भारतीय चिन्तन, जयपुर नेशनल पब्लिशिंग हाउस, पृष्ठ संख्या 272